रश्मि

2022-23

ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज

दिल्ली विश्वविद्यालय

रश्मि

2022-23

वर्ष 69, अंक 2 {ई-पत्रिका}

संरक्षक

प्रो. नरेंद्र सिंह

प्राचार्य, ज़ाकिर हुसैन दिल्ली महाविद्यालय

शिक्षक संपादक

डॉ. सुरैया खान

छात्र संपादक

देवांश, प्रियांशु, निखिल, मृणाल

सम्पादक मंडल
2023

संपादकीय

ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज शायद मेरी जानकारी में ऐसा अकेला कॉलेज है जहां से अलग अलग विभागों की इतनी सारी पत्रिकाएं निकलती हैं। इस प्रकार यहां से निकलने वाली हर पत्रिका अपने विभाग की विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराती है। इसी कड़ी को जोड़ती रश्मि पत्रिका हिंदी विभाग की वार्षिक निकलने वाली हिंदी पत्रिका है।

ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज की सुदीर्घ और गौरवशाली यात्रा में हमारी पत्रिका रश्मि का विशिष्ट स्थान है। छात्र अपनी भावनाओं,विचारों और रचनात्मकता को नई गति रश्मि के माध्यम से देते रहे हैं। संपादक मंडल ने विद्यार्थियों की रचनात्मकता को कविता, कहानी, लेख, चित्र आदि के माध्यम से रश्मि के इस अंक में आपके समक्ष प्रस्तुत किया है।

कॉलेज द्वारा होने वाली विभिन्न गतिविधियों जैसे राजभाषा क्रियान्वयन संगोष्ठी का विवरण हो या विभाग द्वारा हिंदी दिवस पर हिंदी के प्रचार-प्रसार पर आयोजित किए गए कार्यक्रम हो इसकी रिपोर्ट भी रश्मि में छपी जाती रही है।

संपादक मंडल के सदस्यों ने जो श्रमसाध्य किया है,वह अभिनंदनीय है। आशा है रश्मि का यह अंक आपको पसंद आएगा और आपकी रचनात्मक संतुष्टि की दृष्टि से भी यह बेहद उपयोगी साबित होगा।त्रुटियों की संभावना से मुकरा नहीं जा सकता फिर भी आप सभी के सुझावों का स्वागत रहेगा।

काश

काश, किसी ढलती शाम तुम मेरा नाम लो
अकेला बहुत हूं आंखों से पहचान लो
और गैरों से मेरे बारे में क्यों ही पूछते हो
कभी मुझसे ही मेरा हाल जान लो

डूबती कश्ती को कब तक कोई बचाए
इक तरफा प्यार को कब तक कोई निभाए
कभी तो चेहरे से पढ़ने की कोशिश कर
हाल-ए-दिल को जुबां से कब तक कोई बताए

बात करने के लिए कोई बात तो हो
साथ देने के लिए कोई साथ तो हो
कागज़ पर भी लिख देंगे दर्द-ए-दिल का हाल
पर पढ़ने के लिए कोई बेताब तो हो

– पुष्पेंद्र चौधरी

पश्चाताप

बहुत दिनों से बैठा बैठा
मन ही मन मैं सोच रहा
कुछ बात सुनीं कुछ बात कहीं
खुद ही खुद में मैं मौन रहा

याद किया वो बचपन भी
और आज का यह अर्थ अर्जन भी

क्या सुनहरे पल वह छूट गए
मन ही मन से सब फूट गए
कोई यार गया
कोई हार गया
कुछ रिश्ते टूटे नाते टूटे
भाई -भाई के खाने छूटे
हुआ जमीन पर एक विवाद
बन गया वह भी एक विषाद
मिल गया अगर मुझे वह टुकड़ा भी
क्या प्यार दोबारा मिल पाएगा
या फिर उस जमीन के टुकड़े में
मुझको दफनाया जाएगा

- अर्पित शुक्ल

नज़्म का ख्याल

कल रात एक नज़्म का ख्याल आया था
मैं लिखता उन्हें किसी पन्नें पर
उससे पहले
वो दफ़न कर मुझको चली गई
सुबह से कोशिश कर रहा हूं
कुछ लफ्ज़ यदि याद आ जाए
तो नज्म को जैसे-तैसे पूरा कर लूंगा
लिख दूंगा तुम्हारी कुछ
कभी ना हुई मुलाकातें
वो सपने जिसमें
हम दिनभर बगीचों में घूमा करते थे
नज़्म शुरू हुई तो ख़त्म भी होनी है
तुम्हारी निकाह की रात और
मेरा तारों को गिनते-गिनते उंगली जला देना
क़बूल थी मुझे तुम
और मैं भी तुम्हें क़बूल था
बस वो मौलवी पढ़ न सका
हमारा निकाहनामा तुम्हें यकीन था
हम ज़रूर मिलेंगे
मुझे यकीन है नज़्म
मुझसे ज़रूर मिलेगी।

– मो. तोशिब

लिखते गए यादों को

लिखते गए यादों को एक कोरे पन्ने पर
पलट कर देखा कुछ भी लिखा नहीं था
दोष किसका है
उस कलम का जिसने लिखा नहीं
या स्याही जो कोरेनरांग की थी
शायद ख्याल भी दोषी होंगे
बड़े हल्के और बारीक थे
कुछ गाढ़े होते तो कोरी स्याही से भी छप जाते
उस नींव को क्या कहना जिसका चलना दुश्वार था
खरोंच तो सकती थी कुछ शब्दों को पन्नें पर
अब इन कोरे कागजों को
दफ़नाने का जुर्म करना है
शायद जाग जाए कब्र के अंधेरों में
जैसे उस दिन सिपाह रात में आकर छू गए थे
लिखते गए यादों को एक कोरे पन्नें पर
पलट कर देखा कुछ भी लिखा नहीं था।

– मो. तोशिब

मैं मानस-सा शिथिल प्रिये

मैं मानस-सा स्तब्ध सदा, तुम धारा-सी अविरल चलती हो।
मैं अंबर-सा ठहरा रहता, तुम अंशुमान बन ढ़लती हो ।

चिलम तरह मैं जलता हूं, तुम हवा तरह सुलगाती हो।
मैं पूस माह की धुंध प्रिये, तुम सावन का सा पानी हो ।

मैं चट्टानों-सा अडिग सदा, तुम सुर सुरिता सी बहती हो।
चुप रहता हूँ मैं अक्सर, तुम हर पल कुछ-कुछ कहती हो ।

मैं शीतल पय का प्याला हूं, तुम चाय की जैसी गर्म प्रिये।
मैं पत्थर-सा हूं भावहीन, तुम रेतनुमा हो नर्म प्रिये।

जिन पलों से दूर जा चुका हूं मैं, जिसे लोग शहर कहते हैं।
जिन पलों में कभी उछलता, कूदता, दौड़ता था,
अब शहर जाकर भाग रहा हूं।
कभी काम के लिए भाग रहा हूं,
कभी जिम्मेदारियों के लिए भाग रहा हूं,
तो कभी भाग रहा हूं उससे, जो कि मैं कभी हुआ करता था।

ये जो दूरी है, मेरे यथार्थ में और मेरे वर्तमान में,
लोग समझते हैं कि यह प्रगतिशीलता के विभिन्न आयाम हैं।
शायद ना चाहते हुए भी, शायद सब जानते हुए भी,
पर कुछ तो मजबूरी है, जो बताए नहीं बताई जाती,
कोई तो मजबूरी है जिसके कारण मैंने भी प्रगतिशीलता
नाम के इस झूठे सच को संचित कर लिया है।

जिसके लिए मैं भाग रहा हूं वह सब ही अब धुंधला हो चुका है।
शहर में बिजली के खंभे हैं, जिन्हें लोग चमकता हुआ बताते हैं,
पर मुझे वो उजाला नजर नहीं आता, शायद जिस झूठे सच को मैंने अपनाया है,
उन खम्भों की ओर ऊपर देखते हुए वह चश्मा उतर जाता है।

मुझसे पुराने लोग, जो इस शहर का सच जान लिए हैं,
मुझे एक भरी गरम बस के अंदर एक वार्ता में बताए थे
कि बाहर क्या आए हो अब अपने ही घर के मेहमान हो जाओगे।
अब घर आता हूं तो महसूस होता है।
कि अपनापन तो है, पर यादें ही हैं जो उसको बनाए रखती हैं,
वर्तमान है, तो बस किसी बंद कमरे में रखे उपन्यास के जैसा,
जिसमें लिखा तो हर रस हुआ है,
पर पन्ने पीले पड़ चुके हैं और कवर धूल खाया हुआ है।

पर प्रारब्ध होगा शायद कोई,
वही प्रारब्ध जिसके बारे में मैं अक्सर लिखता हूं,
सोचता हूं और बोलता हूं।
वह प्रारब्ध जिसे स्वीकृत करना अपरिहार्य है।

इसको भी प्रारब्ध समझ कर कर लिया स्वीकार,
सामाजिक मानदंड को बना लिया सार्वभौमिक सत्य,
और भागने लगा,
आगे भी भागूंगा जबतक प्रगति नाम के इस शब्द से मेरी थोड़ी बातचीत ना हो जाए।
बस भागते रहूंगा।।

उन सब साथियों के लिए, जो भाग रहे हैं,
जो शहर आए हुए हैं, जिन्होंने घर छोड़ा है।

शाम रंगीन, शामें हसीं,
खूब सुना होगा ना तुमने भी,
कभी सोचा है क्यों शाम इतनी निराली है, इतनी सुंदर है?
तुम्हें बताकर तुम्हारे हृदय को भरने की गुस्ताखी किए बिना शायद
मेरा भरा हुआ हृदय भी हल्का ना हो प्रिए।

संध्या सौंदर्य है।क्यों है?
क्योंकि यह सार है।
किसका सार है?
यह सार है संसार का सार है।

नई उमंग सवेरे की, अपनी ऊर्जा दिन को सौंप देती है,
दिन कभी तपता है कभी कांपता है तो कभी भीगता है।
ऐसे ही समय काट लेता है दिन।
पर जब दिन अपने चरम को छूता है,
अपनी सारी ऊर्जा के निखार को वह आगे की ओर धकेल देता है।
इतना कमज़ोर नहीं कि वह ऊर्जा वापस दिन के पास लौट आए और इतना मज़बूत भी नहीं की अंधेरे की ओर इस चक्र को अग्रसर कर दें।
तो होता क्या है कहां जाती है ये ऊर्जा?
फिर एक माया होती है, एक जादू होता है, इस ही को हम शाम कहते हैं।
दिन की चकाचौंध से शाम का समा और रात्रि की शीतल शांति से पहले शाम की अटकेलियां।
जादू ही तो है।कभी सुंदर नारंगी सूर्यास्त, कभी छंटी हुई धुंध,
कभी घने मेघ तो कभी फटे हुए आसमान से रक्त संचार की तरह बहती हुई धूप।
क्या जादू नहीं?
शाम विदा करती है उन सारी कुंठाओं को और बुलाती है सुकून को बिखर जाने के लिए।
यह है मेरी शाम, दिव्य है, चमत्कारी है, आध्यात्मिक है, बड़ी सुंदर है।
और जैसा कि मैंने पहले कहा था कि शाम सार है।
दूसरे पहर के जाने का चौथे के आने का सार है।
एक दिन का नहीं हर दिन का सार है।
और अनंत का सार है तो जीवन का सार है।
यह जोश की शाम है, पर तुम्हें क्यों बताया?
क्योंकि मेरी स्याही से जब शाम छलकती है तो मेरे मन में तुम्हारी तस्वीर होती है।
मेरी शाम में तुम नहीं हो, मेरी शाम ही तुम हो,
और तुमने देख लिया कि मेरी शाम के बिना मेरा दिन कितना निष्क्रिय है।
तुम सार हो मेरा, वह भी अनंत हो अलौकिक हो।
लेकिन तुम गर नहीं हो तो फिर यह दिन होकर भी नहीं है, हैं तो अपनी जगह पर,
लेकिन निर्जीव से हैं।
मेरी रातें इस शाम के (तुम्हारे) बिना शांत और शीतल नहीं, काली और भयावह हैं।
शाम रंगीन है जब शाम में रस है(तुम हो)
वरना शाम को तो कई ज़ख्मी तन्हा भी कह कर गए हैं।

– मानस पंत

इतिहास लिखा है पन्नों में

इतिहास लिखा है पन्नों में चर्चाओं में तो बातें हैं
जो लिखा वही सच्चाई है ये बातें भी लिखवाई हैं
न जाने किसकी कलमें थी न जाने किसके कागज़ थे

लिखा स्वयं की मर्जी से जो अनुकूल रहा था उनके
कुछ किरदारों को बतलाया जिनसे मन मिलते थे उनके
न मिली सभी को सही जगह जिसके वो हकदार भी थे
कुछ बतलाया कुछ झुटलाया सबकुछ अपने अनुकूल बनाया

इतिहास लिखा उन लोगों ने जिनकी जेबों में गर्मी थी
इतिहास लिखा उन लोगों का जिनसे उन जेबों में गर्मी थी
भूली भटकी उस जनता को तब खूब बहकाया था सबने
खूब लिखाया खूब पढ़ाया उन झूठी बातों को हमको

जो अमर हुए चर्चाओं में पन्नों में उनका जिक्र कहां हैं
संवैधानिक राजा जिनके इतिहास लिखे हैं
चर्चाओं में उनका जिक्र नहीं है

आओ फिर से एक शुरुआत करें
इतिहास की फिर से बात करें
कर, कलम, कागज़ सब आजाद करें
न भय न भ्रष्टाचार की उसमें बात करें
आओ एक नए इतिहास को आबाद करें।

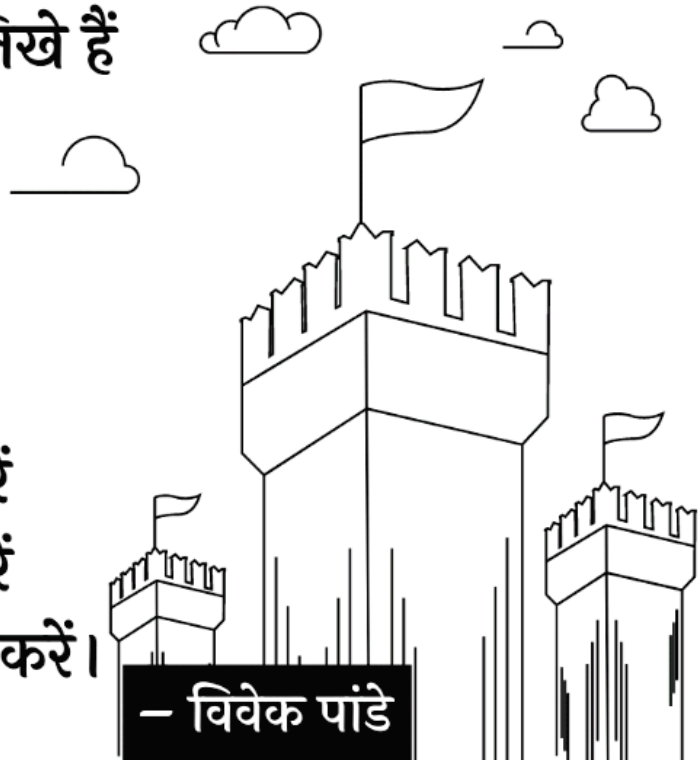

– विवेक पांडे

आजादी की उजियाली

जब अंशुमान की आभा में तम का प्रभुत्व छा जाता है
हद नृशंसता की लांघ कर मानव,
मानव को खाता उपनिवेशता की जंजीरें जन-जन को जकड़ती जाती हैं
जब पिंजरे से कंचन की चिड़ियां मुक्ति मुक्ति चिल्लाती है
जब पराधीनता के बंधन में आदम बंधता जाता है
जब मस्तक के ऊपर से जल धारा प्रवाह बढ़ जाता है
तब स्वतंत्रता की प्राप्ति हेतु आवाज़ उठाना पड़ता है
प्रिय मातृभूमि की रक्षा में तलवार चलाना पड़ता है
है वसुधा का कण-कण रंगा वीरों की लहू की लाली से
होगा गुलामी तम दूर सदा आजादी की उजियाली से।

गोरों की सत्ता उन्मूलन की वीरों में हुंकार थी
शत्रु के शोणित की प्यासी ललकारती तलवार थी
बच्चे, युवा, वृद्धजन, नारी सब ने मन में ठानी थी
मातृभूमि की रक्षा में दे दी अपनी कुर्बानी थी
रज वसुंधरा की मस्तक पर घिसकर हमने संकल्प किया
केवल व केवल स्वतंत्रता का हम सबने अविकल्प लिया
मां का वो तारा टूट गया पिता का सूरज डूब गया
बहन सिमट कर रोने लगी भाई का साथ वो छूट गया
स्वाधीनता का पुष्प खिलेगा दृढ़ संघर्ष की डाली से
होगा गुलामी तम दूर सदा आजादी की उजियाली से।

है तीन रंग से रंगा तिरंगा भारत माता की शान है
लहराता नील गगन पर यह स्वतंत्र भारत की पहचान है
है प्रथम भाग में केसरिया रंग प्यारा प्रतीक बलिदान का
हैं श्वेत मध्य में शांति का व चक्र सदा गतिमान का
और हरे रंग से रंगी पताका सम्बद्ध है हरियाली से
होगा गुलामी तम दूर सदा आजादी की उजियाली से।

स्वाधीनता के महायुद्ध में लड़ रहा हिन्दुस्तान था
भारत माँ के सपूतों का रंग लाया बलिदान था
ध्वज की प्रतिष्ठा के खातिर कितनों ने प्राण गंवाये थे
कितनों के शव वापस घर पर दर्शन हेतु न मिल पाए थे
मातृभूमि की रक्षा हेतु सैनिक बनना अनिवार्य नहीं
बाये हाथों से लिखा गया इतिहास हमें स्वीकार्य नहीं
इतिहास लिखा जाना चाहिए सत्यता की पावन स्याही से
होगा गुलामी तम दूर सदा आजादी की उजियाली से।

सरहद पर है डटा हुआ भारत माता का वीर जवान
निज प्राणों से प्यारा है उसको सर्वप्रिय निज हिन्दुस्तान
सर्जिकल स्ट्राइक के प्रमाण सैनिकों से मांगे जाते है
यह दुस्साहस करने से पहले कुछ नेता न लजाते है
कब तक बंधे रहेंगे भुज व्यर्थ आदेशों की जाली से
होगा गुलाम तम दूर सदा आजादी की उजियाली से।

– विजय कुमार मिश्रा

आखिर क्यों

आखिर क्यों? है आज हम आजाद यहाँ
या केवल आजादी का नाम है
शारीरिक तो हो गए आजाद क्या मानसिक गुलाम है?

मेरे मन में सदा एक विचारणीय प्रश्न आता है
जिसका उत्तर स्वयं मुझे मेरा समाज नहीं दे पाता है

क्यों ब्राह्मण क्षत्रिय श्रेष्ठ है?
क्यों वैश्य शुद्र निकृष्ट है?
जब मानवता अविभाज्य है
तो क्यों मानव जाति में भाज्य है?
फिर क्यों ये हमारा सभ्य सामाज
करता जाति श्रेष्ठता की बात है?
शारीरिक तो हो गए आजाद क्या मानसिक आजाद है?

नारी देवी का रूप जहां कामाख्या पूजी जाती है
फिर वह नारी माहवारी में अपवित्र बतायी जाती है
फिर उस पर यह सभ्य समाज सदा प्रतिबंध लगाता जाता है
और इन बंदिशों का कोई तार्किक कारण नहीं बताता है
फिर क्यों ये हमारा नारीवादी समाज
करता झूठे मानवाधिकारों की बात है
शारीरिक तो हो गए आजाद क्या मानसिक आजाद है ?

लोकतंत्र भारत में हमको मिला वरदान स्वरूप यहां
नेताओं को चुनने की है जनता को आजादी जहां
फिर नेताओं के ये रक्षक स्वतः भक्षक क्यों बन जाते है ?
परसेवा से पूर्व सदा निज सेवा भाव क्यों लाते है ?
ये मीडिया भी क्यों नहीं करती गंभीर मुद्दों पर बात है?
शारीरिक तो हो गए आजाद क्या मानसिक आजाद है?

– विजय कुमार मिश्रा

शिष्टाचार

सर्वप्रथम इस प्रतिष्ठित मंच को सादर प्रणाम जो कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने विचार व्यक्त करने का समान अवसर प्रदान करता है। आशा करता हूं आप सभी सकुशल होंगे इसी मंगलकामना के साथ अपने विचारों को व्यक्त कर रहा हूं। संस्कारों की पावन परंपरा की कड़ी में एक परंपरा सनातन धर्म द्वारा चली आ रही है,वो परंपरा है प्रातः काल उठकर अपने से बड़ों को प्रणाम करना,प्राचीन काल से चली आ रही इस परंपरा का निर्वहन हमारे आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम जी ने भी किया था उनकी महानता,दयालुता एवं पुरुषों में सर्वोत्तम बनने के पीछे का सबसे प्रमुख कारण यही है, अपने से बड़ों का आदर करना। श्री रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है :-

"प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिं माथा॥"

जो विद्यार्थी प्रातः काल में उठने के बाद अपने माता पिता एवं अपने से बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं, वो विद्यार्थी जरूर सफल होते हैं। प्रातः काल उठ कर जो भी व्यक्ति अपने से बड़ों का आशीर्वाद लेता है उनके मन मस्तिष्क में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है जोकि उन्हें पूरे दिन अपने कार्यों में सफल होने एवं नए कार्य के लिए प्रोत्साहित करता है। किंतु आज के समय में यह परंपरा एक तरह से लुप्त होती जा रही है, आज के विद्यार्थियों के पास अपने मित्रों को Good morning बोलने के लिए समय है लेकिन अपने माता पिता तथा अपने से बड़ों का आशीर्वाद लेने के लिए समय नहीं है। जो विद्यार्थी प्रातः काल उठकर अपने से बड़ों का आशीर्वाद नहीं लेते हैं वो आज ही प्रण ले की अब हर दिन प्रातः काल उठकर अपने माता पिता तथा अपने से बड़ों का आशीर्वाद लेंगे एवं विद्यालय जाने से पहले भी अपने से बड़ों का आशीर्वाद लेके जायेंगे।और आशीर्वाद भी पूरी तरह चरण स्पर्श कर के ही लें, ये नहीं की घुटने से हाथ लगाके प्रणाम कर लिया। क्योंकि माता पिता,गुरु एवं अग्रजनों के आशीर्वाद में अपरंपार शक्ति होती है, अगर आपको कोई आशीर्वाद दे रहा है तो आप समझिए कि वो व्यक्ति अपने जीवन के बहुमूल्य क्षणों में से हर एक क्षण आपके ऊपर न्योछावर कर रहा है। अगर आप सभी को मेरे विचार उपयोगी लगे हों तो आप सभी इसे अपने जीवन में अवश्य उतारिए।

जय हिन्द

– कुशाग्र राय

एक चमक

भारत के मध्यप्रदेश राज्य के पन्ना जिले में एक छोटा-सा कस्बा है, जिसका नाम है 'पवई' वहाँ पर रहने वाला एक छात्र जो कि बहुमुखी प्रतिभा का धनी था। एक छोटे से विद्यालय सरस्वती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत था । उसके पिता राजस्व विभाग में मे कर्मचारी तथा माता गृहिणी थी। परिजनों एवं गुरुजनों के आशीर्वाद से उस बालक मे अपने अथक परिश्रम व लगन से मैट्रिक की परीक्षा में राज्य स्तर पर प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त किया था। मुख्यमंत्री तथा अन्य अधिकारियों द्वारा उसे सम्मानित किया गया । मुख्यमंत्री द्वारा निज निवास पर आमंत्रित कर उसे व उसके पिता को सम्मानित करते समय उसने अपने पिता की आँखों में एक अलग ही चमक देखी जो शायद उसने अपने संपूर्ण जीवन में कभी न देखी थी। वह थी - अभिमान की चमक।

तत्पश्चात वह बालक उस चमक को हमेशा बरक़रार रखने हेतु उच्च शिक्षा के अध्ययन के लिए उसने भारत के दिल्ली विश्वविद्यालय में दाखिला लिया।
उसके विषय उसकी रुचि से पूर्णतः भिन्न थे क्योंकि उसके रुचिकर विषय उसे महाविद्यालय द्वारा प्रदान नहीं किए गए। उस बालक के संघर्ष पथ का परिदृश्य पूर्णतः परिवर्तित था। एक कस्बे से सीधे एक महानगर जाना तथा वहां अध्ययन करना उसके परिवेश से पूर्णतः भिन्न था। अपने परिवेश को अनुकूल बनाने हेतु प्रयासरत वह बालक महाविद्यालय गया जहां उसने दाखिला लिया था।

महाविद्यालय का मार्ग उसके एक सहपाठी ने प्रशस्त किया। जब वह अपनी कक्षा में गया तो उसने देखा की किस प्रकार उस महाविद्यालय में उच्च जीवन स्तर के लोगों का वर्चस्व है। उस हिंदी भाषी व्यक्ति को सदैव प्राध्यापकों द्वारा एक अंग्रेजीभाषी छात्र से कम आंका जाता था। परंतु उसकी प्रतिभा व सुविचारों से एक प्राध्यापक प्रभावित हुई। उनकी आयु लगभग 45 वर्ष थी।वह छात्र उस महानगर की चकाचौंध में दिखावे से बहुत निराश हुआ।
दर्शन शास्त्र का अध्यापन कराने वाली प्राध्यापिका ने उसे आवश्यक पुस्तकें भी पुस्तकालय से प्रदान करवायी।
जब वह बालक अपने घर को जाने वाला था तब वह इस महानगर की चकाचौंध में अपने घर जाने का रास्ता भूल गया।तत्पश्चात् उसकी प्राध्यापिका ने उसे स्वयं ही अपनी कार द्वारा उसे घर तक छोड़ने के लिए आहुत किया। उसके मुख पर आशा की एक किरण जागृत हुई उस प्राध्यापिका का एक छात्र के प्रति स्नेह देखकर।

समय बीतता गया परंतु महाविद्यालय में उसके कोई मित्र न बने। कुछ ही दिनों में उसका जन्मदिवस आने वाला था। मित्र न होने की स्थिति में वह हताश होकर अपना जन्मदिवस मनाने हेतु अपने गांव पवई आ गया। उसके पिता ने उससे पूछा की बेटे आजकल के लड़के तो अपना जन्मदिन अपने मित्रों के साथ मनाते है । और तुम दिल्ली से पवई आ गए । उस बालक ने सम्पूर्ण घटना बताई की किस प्रकार उसके सादगीपूर्ण जीवन पर उसके साथ भेदभाव किया जाता था। पिता वर्तमान की स्थिति से परिचित था क्योंकि उसके पास अनुभव की कमी नहीं थी।

जन्मदिवस के अवसर पर जब उसके पिता उससे उपहार के लिए पूछा तो बालक ने बहुत ही करुणामयी स्वर में कहा - "पिताजी! मुझे भी आप महंगा फोन व कपड़े दिलवा दीजिए ताकि मैं भी अपने सहपाठियों के सदृश्य दिख सकूँ।"

उस बालक का पिता उसकी इच्छाओं को पूरा करने में पूर्णतः योग्य था परन्तु वह अपने पुत्र को क्षणिक वस्तुओं के प्रति मोह नहीं चाहता था ।

उसके पिता ने मुस्कुराते हुए कहा कि "पुत्र! मै तुम्हें इससे भी कीमती उपहार दूंगा।"

उस पिता ने जब उसे उपहार दिया तो वह बालक खूब प्रसन्न हुआ तथा उस उपहार को खोलकर देखने लगा। उसने पाया की उसमें मात्र एक साधारण सा दर्पण है। वह क्रोधित हो गया और अपने पिता से पूछने लगा ," क्या यहीं कीमती उपहार है ।" पिता ने मुस्कुराते हुए कहा ," नहीं! इस दर्पण के जो भीतर है वह कीमती है ।"

बालक द्वारा स्वयं का प्रतिबिंब देखने के पश्चात वह समझ गया की उसके पिता उसे क्या दिखाना चाहते थे। उसकी आंखों से करुणामय अश्रु बहने लगे।

पिता द्वारा उन आंसुओं को पोंछने के पश्चात् पिता ने कहा," बेटे! ये क्षणिक वस्तुएं तुम अनेक बार खरीद सकते हो परंतु यदि इस कीमती व अमूल्य चरित्र को खो दिया यह पुनः प्राप्त नहीं होगा।"

बेटा जाकर अपने पिता के हृदय से लग गया व उच्च जीवन स्तर के लोगों के सदृश्य दिखने की अभिलाषा छोड़कर पुनः दिल्ली आकर अपने संघर्ष पथ पर गतिमान हो गया।

वह बालक अपने अथक परिश्रम से सफलता के शिखरों को छूते हुए एक प्रशासनिक अधिकारी बनने हेतु संघर्ष करने लगा क्योंकि वह अपने पिता की आंखों में वही चमक देखना चाहता था जो थी - "अभिमान की चमक , पुत्र पर गर्व की चमक।"

"जीवन के तप्त अंगारों को सर्द तुम्हें बनाना होगा,
अथक परिश्रम करके तुम्हें सफलता को पाना होगा।"

– विजय कुमार मिश्रा

एक रात

आधी रात हो चुकी थी। ठंडी–ठंडी हवाएं पेड़–पौधों और पत्तियों को झूमने पर मजबूर कर रही थीं। चाँद अपने पूरे परवान पर था। ऐसा लग रहा था मानो वह अपनी रौशनी से धरती पर फैले अंधेरे की चादर को हटा देना चाहता है।

वह आज भी वहीं बैठा था जहां वह अक्सर बैठा करता था । शायद उसे किसी का बेसब्री से इंतजार था। वह एकटक आकाश को निहार रहा था । कभी वो चांद को निहारता तो कभी तारों को। बाहर वातावरण शान्त था, किन्तु उसके मन में हलचल मची हुई थी। उसकी प्यारी सी छोटी-छोटी आँखें न जाने किसको ढूँढ रहीं थी । तभी अचानक तारों के समुद्र में से एक तारा चमक उठा। थोड़ी देर के लिए उस तारें ने चाँद को भी निस्तेज कर दिया। तारें के अत्यधिक प्रकाश से उस नादान बच्चे की आँखें चौंधियाँ उठीं। क्षण भर में उसके सामने बड़े - बड़े सुनहले पंखों वाली एक सुन्दर-सी परी खड़ी थी। अचानक सब कुछ ठहर सा गया था ।

बच्चे ने अपनी नन्हीं उंगलियों से परी का हाथ पकड़ा और उसे बगल में बैठा लिया और फिर दोनों बातें करने लगे। प्रकृति भी उन दोनों की बातें सुनने से अपने आप को रोक न पा रही थी। उस नादान बच्चे के मन में उठा तूफान अब शान्त हो चुका था। वह चाह रहा था कि मन में उठे सारे संदेहास्पद प्रश्न परी के सामने क्षण भर में प्रस्तुत कर दें। न जाने क्यों बच्चा सहमा हुआ था । उसका आत्मविश्वास पहली बार डगमगा रहा था। परी से तो उसने बहुत सारी बातें की थी, पर उन नीलाभ आँखों में उतनी अधिक उत्सुकता कभी नहीं थी। परी को भांपते ही उसने स्नेहिल आवाज़ में उससे संदेहास्पद प्रश्न पूछना शुरु कर दिया बच्चे की उत्सुकता न जानें क्यों चरम पर थी। उस नादान का पहला प्रश्न था... परी..! एक बात बताओ हम जो सोचते है, वह पूरा क्यों नहीं हो पाता है?" तब परी ने कहा..."हम जो सोचते हैं, या जो कुछ पाना चाहते हैं उसके विपरीत नकारात्मक सोच भी हमारे मन में धीरे-धीरे पलने लगती है और एक ऐसा समय आता है जब नकारात्मक सोच का हमारे मन पर पूर्णरुपेण एकाधिकार हो जाता है और चाह कर भी हम जो पाना चाहते हैं या जो हमारा लक्ष्य है उसे प्राप्त नहीं कर पाते हैं। यह मनुष्य की कमजोर मानसिक प्रवृत्ति के कारण होता है। हमेशा उसी के बारे में सोचो जो तुम्हारा लक्ष्य है, उसी को पाने की चाह रखो, नकारात्मक सोच को अपने सकारात्मक सोच पर कभी हावी मत होने दो। फिर देखो...तुम्हें वहीं मिलेगा जो तुम चाहोगे ।"

भगवान कौन है? भगवान की पहचान क्या है ? " यह दूसरा प्रश्न था जो अब नादान बच्चे ने परी से पूछा। यह सुनकर परी पहले तो मुस्कुराई फिर उसने कहा.. देखो ! तुमने जो प्रश्न पूछा है वह एक अस्तित्वहीन प्रश्न है। लेकिन फिर भी तुम्हारी शंका दूर कर देती हूँ। भगवान बस एक मानी हुई प्रतिमा है। मनुष्य अपने मन एवं इन्द्रियों को केन्द्रित करने के लिए अपने जीवन का एक केन्द्रक मात्र भगवान को मान लेता है। मनुष्य सारे कर्म स्वयं करता है। पर हर बार उसे यहीं लगता है कि सब कुछ भगवान मर्जी से होता है। मनुष्य अपने जीवन का अधिकतर समय मन्दिर, पूजा, भजन एवं धार्मिक विवादों या प्राचीन धारणाओं को मानने में बिता देता है। लेकिन वह यह नहीं जानता कि मनुष्य स्वयं हीं भगवान है। सारे कर्म स्वयं करता है और कर्म के फल को वह स्वयं सुनिश्चित करता है। भगवान की कोई पहचान नहीं है। वह मनुष्य की सोच, श्रद्धा के कारण पहचाना जाता है।" बच्चा बहुत खुश था । उसे अपने प्रश्नों के जवाब बड़ी सरलता से मिल रहे थे।

कुछ देर दोनों शान्त रहे। बच्चे को नींद आ रही थी, परी ने भी महसूस किया कि उसे नींद आ रही है, इसलिए उसने बच्चे को टोका नहीं। परन्तु नादान बच्चे की प्यारी आवाज में फिर से उत्सुकता दिखी और वह पूछ बैठा, परी ! भविष्य क्या है? क्या हम भविष्य को देख सकते हैं? क्या हम भविष्य को सुधार सकते हैं?" इतने सारे प्रश्न का सामना होने पर पहले तो परी बेचैन हो उठी। वह सारे प्रश्न का जवाब एक हीं बार में दे देना चाहती थी। इधर बच्चे की उत्सुकता बढ़ते हीं जा रही थी। परी ने कहा, भविष्य हमारे वर्तमान के कर्मों एवं वर्तमान की घटनाओं का दर्पण है। भविष्य को देख तो नहीं सकते परन्तु अनुभव कर सकते है' या अनुमान भी लगा सकते हैं और जहाँ तक भविष्य सुधारने की बात है तो....हाँ... हम अपने भविष्य को सुधार सकते हैं। इसका एक हीं तरीका है...," बच्चा चुपचाप उत्सुकता भरे नेत्रों से परी की ओर देखता रहा। परी फिर बोली "यदि हम अपने वर्तमान को सुधार दें, अच्छे कर्म करें तो हमारा भविष्य स्वयं सुधर जाएगा। "

बच्चे की उत्सुकता धीरे-धीरे सुस्त पड़ने लगी थी। उसने काँपते हुए स्वर में परी से प्रश्न पूछा, " परी !... सब कहते हैं कि मैं मरने वाला हूँ, ये मरना क्या होता है?" बच्चे के स्वर में जो कम्पन्न, भय था उसे परी ने भांप लिया था। वह बोली.. मनुष्य जीवन के उद्देश्य की पूर्ति हीं मृत्यु है। "यहाँ उद्देश्य का तात्पर्य कर्म से है। हमारा जीवन जिन कर्मों को लक्षित करने के लिए बना है, जब ये सारे कर्म लक्षित हो जाते है' तो यह हमारे जीवन की अंतिम सीढ़ी के रूप में हमारे सामने आ जाती। है। यह हमारे जीवन का सबसे बड़ा अमिट सत्य है। जिसे न चाहते हुए भी हमें स्वीकार करना पड़ता है। पिछले जन्म में की गई गलतियाँ, भूल एवं गलत कर्म को सुधारने के लिए प्रकृति हमें एक मौका देती है, और वह मौका मृत्यु है। "

"तो क्या मेरा उद्देश्य पूरा हो गया?" "हाँ, तुम्हारे इस जीवन का उद्देश्य पूरा हो गया है। थोड़ी देर चुप रहने के बाद परी ने बच्चे की ओर देखा। बच्चा सो चुका था। उसकी उत्सुकता सो गई थी, उसकी नीलाभ आँखों में वो चमक न थी । प्रकृति, पेड़-पौधे, ठण्डी हवाओं के लिए तो बच्चा सो चुका था किन्तु परी के लिए शायद वह कभी उठ न पाए क्योंकि उसकी आत्मा इस शारीरिक जंजाल से आज़ाद हो चुकी थी। उस नादान बच्चे को शायद अपने जीवन की सार्थकता एवं अस्तित्व का आभास हो चुका था। शायद उसने अपना वर्तमान सुधार लिया था। उसे भगवान की पहचान हो चुकी थी। उसने जो सोचा था वह उसे मिल गया था। उसे जीवन के सबसे बड़े सत्य का आभास हो चुका था। इसलिए शायद वह कभी न उठ पाए। परी बच्चे के शरीर को वहीं छोड़कर वापस आकाश की ओर उड़ चली। फिर से एक तारा चमका, इस बार उस तारे की चमक पहले से कई गुना अधिक थी। फिर सब कुछ शान्त । ठण्डी हवाओं में सनसनाहट न थी, पेड़- पौधों में वो हलचल न थी। प्रकृति भी पुनः शान्ति की आगोश में डूब चुकी थी । चाँद के प्रकाश की छटा भी मध्यम पड़ चुकी थी और अंधकार का फिर से प्रकाश पर एकाधिकार हो चुका था। शायद फिर से किसी फ़रिश्ते के आगमन का इंतजार था ...

– दीप रंजन

चित्त चंचल सा

जब मेरा चित्त चंचल हो जाता है,
दूर कहीं वह खो जाता है,
जिंदगी क्या चीज़ है भाई?
यही प्रश्न मन में आता है।

एक आकांक्षा उजागर होती है
सवालों का तूफ़ान उमड़ आता है,
जब जीवन की डोर का अंत
स्पष्ट नज़र मुझे आता है।

क्या आप भी सोचते है ?
जो मेरे ख्यालों में आया है
क्योंकि अधिकांश मनुष्य जाति का
इस प्रश्न से दिल घबराया है।

जीवन का अंत हो जाना ही
परम सत्य कहलाता है,
मृत्यु से भयभीत होना तो
आपकी बेवकूफी दर्शाता है।

अपने कर्म करते जाओ
तुम्हारे काम आते हैं,
जैसे मझधार में डूबे को
सिर्फ तिनके का सहारा है।

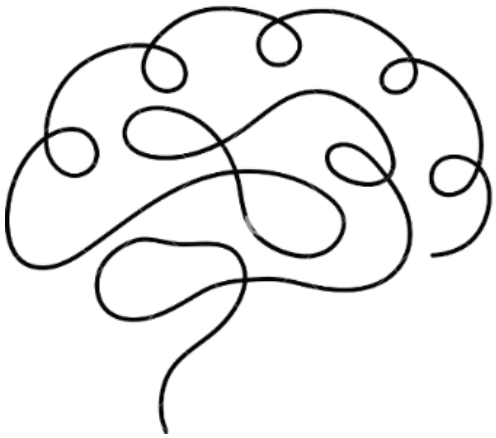

अच्छे कर्म करने से
व्यक्ति का मान बढ़ता है
मृत्यु के बाद भी संसार
व्यक्तित्व को याद रखता है

– शिवोम

आश्चर्य

जब देखा मेरी दृष्टि ने सर्वत्र
तब हृदय को मेरे आश्चर्य हुआ
देखकर नि:शब्द-सा रह गया मैं
कि ये मनुष्य को हुआ क्या है ?

क्यों करता वह इस जगत में
गैरों जैसा व्यवहार अपनों से
और फिर आस लगाए बैठा वो
गैरों से अपनों की भाँति,
अपने को समझता दुखी सबसे
दूजे का दु:ख नहीं समझना चाहता
अगर समझ जाए दु:ख दूसरे का
फिर,अपना दु:ख समझ नहीं जाए!
कर्म करने से भी भागता मन तेरा
फल पाने की आकांक्षाओं में उलझा,
जब चला है मार्ग बेईमानी के तू,
फिर कैसे जीवन होगा सुलझा।
क्यों मनुष्य चाहता अलगाव सबसे
उसका विलुप्त हुआ करुणा का भाव
कुछ सोच और विचार करो तुम
क्या तुमको भी आश्चर्य हुआ ?

– शिवोम

उसकी तलाश

ना जाने क्यों लगता है कि वो कहीं खो गया
अपने अतरंगी सपनों के लिए जागने वाला,
एक रात हमेशा के लिए सो गया
वो जो अपने सारे गमों पे मुस्कुराता था,
कल हाल पूछे जाने पर रो गया वो जो कहीं खो गया ।
काश.....उससे उसका हाल हमने पहले पूछा होता,
तो शायद खबर होती कि शेर की तरह जीने वाला
जिंदगी के तमाम घावों से भरा है,
सुना था वक्त के साथ घाव भर जाते हैं
पर उसका घाव एक अरसे के बाद भी हरे हैं,
ना जाने किसके इंतजार में वो साँसों के साथ मरा है उसे ढूंढ कर वापस लाना है जो खुद का न होकर भी हम सबका अपना हो गया वो जो कहीं खो गया, वो जो कहीं को गया ।

– रिया सिंह

खाक से राख

ना जाने क्यों ?
घड़ी अपनी रफ्तार से चार गुना तेज भाग रही है।
धुंधला दर्पण अब आंखों को चुभता नहीं....
अच्छा लगने लगा है।
घर की चौखट भी अब मेरा साथ छोड़ने लगी है,
रिश्तों का दायरा भी अब सीमित होता जा रहा हैं।
खाली पेट अब भीख मांगने को तैयार है,
नायाब-सी गलियों से अब वास्ता जुड़ता जा रहा है।
फूलों की गंध मुझे नई उमंग देती हैं.....,
मैयत की सफेद चादर मुझे जीवन का अंत दिखाता है।
पर रुकना चलना लगा हुआ है....
पर रुकना चलना लगा हुआ है.....
मुझे कुछ नहीं चाहिए,
फिर भी कुछ पाना है...।
पर क्या ?... और क्यों?
पर क्या ?... और क्यों?
इसका जवाब नहीं है मेरे पास....
पर हां,...
हां.. मेरी मां का सपना है,
मेरे लाल का ख्याति राहों से
दामन से जुड़वाना है।
अब मन के इरादे डगमगाने लगे हैं,
उड़ान भरने से अब डर लगने लगा है।
कैद रहना है मुझे पिंजरे में.....
आसमान को छूने से अब डर लगने लगा है.... ।
क्योंकि.....
क्योंकि सपने मुरझा से गए हैं।
रातें थक चुकी हैं,
चांद छुप चुका है कहीं दूर दराज मेरे दामन से -
और मेरी नजरें तिलिस्मी बातों में खो चुकी हैं.....
जिन्हें कोई आस नहीं है....
सच को देखने की... ।
क्योंकि हिम्मत अब अपने चरम पड़ाव पर है।
और मन अब स्वच्छंदता से वंचित रहना चाहता है।
अमावस्या की रात जीवन का आधार बन चुकी है .....
और मैं..., मैं खुद की हिम्मत को सिर्फ तीन दफा.....
बस...,बस...,बस...
कहना चाहता हूं....।

– माही

मैंने दिल के दर्द कभी न बोले

मैंने दिलों के दर्द कभी ना बोले,
परायों से क्या शिकवे, अपनों के गम कभी न तोले।
समाज के लिए कुछ गुनाहगार होते हैं भोले
मैंने दिलों के दर्द कभी ना बोले।
बंद अंधेरी दीवारों में आज भी
जल रहे शोषण से उभरे जख्मों के शोले
इन आँखों ने अभी एक भी राज ना खोले
मैंने दिलों के दर्द कभी ना बोले।
पर अब वक़्त- ए -बाजी ने थामा हाथ
हारी हुई तक़दीरें- ए- जंग में जीत का साथ
अब इन नफरत भरे अकेलेपन में तू भी सिसक के आराम से रोले
दर्द -ए -एहसास तुझे भी होगा हौले-हौले
आखिर हट ही गये कर्म के अतरंगी चोले
मैंने दिलों के दर्द कभी ना बोलें ।

– रिया सिंह

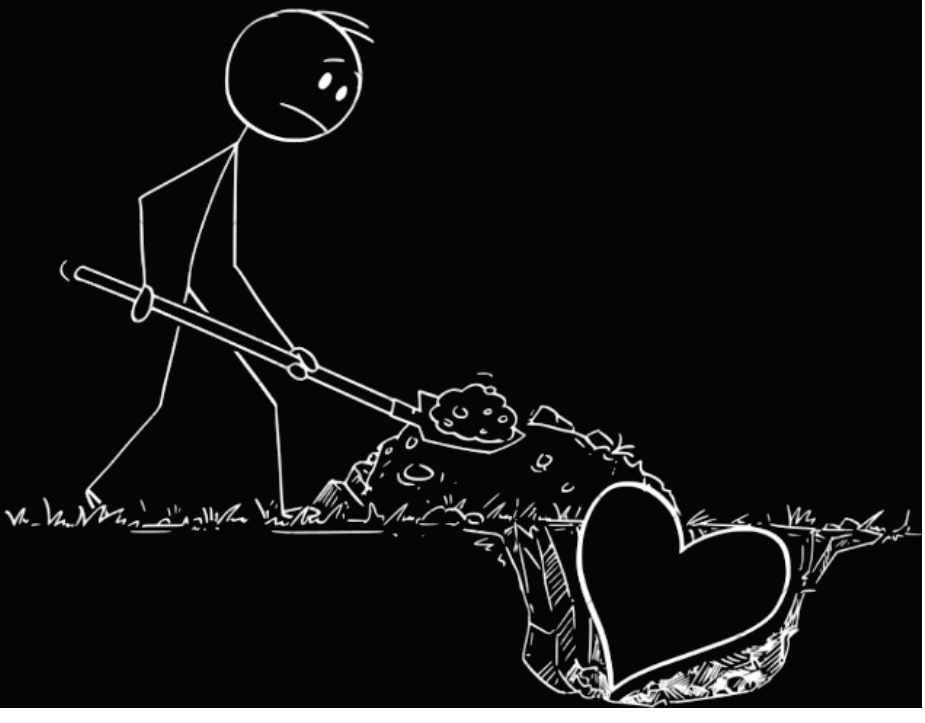

आत्म सम्मान

लड़ रही हूँ आज मैं
एक सम्मान की लड़ाई,
दो मुझको भी सम्मान
जिसकी हूँ मैं हकदार,
क्यों हमेशा आत्म सम्मान की खातिर
सीता ही दे अग्नि परीक्षा,
अपहरण किया रावण ने,
तो कलंकित हुई सीता क्यों ?
बीस वर्ष की लड़की के साथ,
जब होता है दुष्कर्म
जब कहता है समाज हमारा,
लड़की ही होगी चरित्रहीन।
तो पूछती हूँ आज मैं,
दस वर्ष की लड़की भी
क्या होती है चरित्रहीन ?
स्त्री को है सब कहते
तन ढ़ककर रहो तुम,
पुरुष को नहीं सिखाता कोई
बुरी नजर से न देखो तुम ।
शोषण करता है आदमी,
नज़रें झुकाती है स्त्री ।
कब तक लड़ूंगी मैं ये
आत्म सम्मान की लड़ाई ।

– आशिका

यह सिलसिला चलता रहा. रोज रात मेरी आँख ठीक 3:30 बजे खुलती थी और फिर वही चीख मुझे सुनाई देती थी. मैं हर रात की तरह पसीने से तरबतर हो जाता। चारपाई के नीचे रखी बोतल को अंधेरे में टटोल कर खोजता और ढ़क्कन हटाकर गटागट पानी गले से नीचे उतार लेता। आखिर कौन है वो जो इतनी रात गए दर्द से तड़प रहा है और उसकी मदद करने वाला कोई नहीं! क्या उसके माँ-बाप गुज़र चुके हैं? क्या इस दुनिया में उसका कोई साथी नहीं? क्या उसका कोई रिश्तेदार भी नहीं? मैं तो बस उसकी आवाज़ सुन पाता था। आवाज़ से ही अंदाजा लगाता कि वो 30-35 से अधिक उम्र का नहीं होगा या शायद उससे भी कम इतनी कम उम्र में किस बैचेनी ने उसका जीना मुहाल कर दिया है ! बहुत से प्रश्न थे जिससे मैं हर रात 3:30 से लेकर सुबह तक जूझता रहता।

'बचाओ-बचाओ, आह! मुझे कोई इस पीड़ा से निकालो। दर्द से शरीर का कोना-कोना फटा जा रहा है। आखिर कोई बचाने वाला नहीं है मुझे क्या? क्या में ऐसे ही तड़प-तड़प कर मर जाऊँगा?"

उसकी यह चीख दिन भर मेरे कानों में गूंजती रहती। ऑफिस में भी मन लगाकर काम नहीं कर पा रहा था। किसी अनजानी मदद की गुहार मुझे बार-बार परेशान कर रही थी। इसी चक्कर में मैं बॉस से डांट भी खा चुका था, गर्लफ्रेंड ने भी दो दिन टोक दिया, तुम कहीं खोए-खोए से रहते हो? कहीं और दिल लगा लिए क्या जनाब ? मैं हंसकर उसके माथे को चूम लेता और वह लाड़ से मुझसे लिपट जाती। मैं उसे कुछ बता भी नहीं पा रहा। क्या बताऊँ, कैसे बताऊँ कि एक अनजानी चीख मुझे सोने नहीं दे रही। सोना तो छोड़िए अजी जीने नहीं दे रही! आज ऑफिस से लौटते समय मैंने सोच लिया था कि उस आवाज़ का पीछा करूंगा, कौन है वो ? किस दर्द से इतना बेहाल पड़ा है? रास्ते भर सोचता रहा कि उसके दर्द को बाँट लूंगा। बना लूंगा उसे अपना दोस्त हर दिन ऑफिस से लौटते समय उसके हाथो को अपने हाथो में लेकर दिलासाएँ दूंगा। कभी जूस लेकर मिलने जाऊँगा तो कभी नारियल पानी, एक अकेले बीमार आदमी के लिए इतना तो किया ही जा सकता है। इंसानियत का भी यही इंसान अगर इंसान के काम नहीं आएगा तो कौन आएगा? बहुत-सी बातें मेरे मन में चलत यूं की अँधेरी गली के पिंजड़े से कमरे में रहने वाला हर शख़्स अकेलापन को व्यक्तिगत रूप से जानता है..

अकेले बीमार आदमी के लिए इतना तो किया ही जा सकता है इंसानियत का भी यही तकाज़ा है। इंसान अगर इंसान के काम नहीं आएगा तो कौन आएगा? बहुत-सी बातें मेरे मन में चलती। महानगरों की अँधेरी गली के पिंजड़े-से कमरे में रहने वाला हर शख़्स अकेलापन को व्यक्तिगत रूप से जानता है। दिन भर की नौकरी, शाम को ट्रैफिक, सीट के लिए किच-किच पसीने की बदबू से जूझता हुआ इंसान जब कमरे में लौटता है तो इंतज़ार कर रहे होते हैं सिंक में पड़े जूते बर्तन, पानी की पुरानी बोतल, लैपटॉप, सिगरेट-शराब और मोहम्मद रफी के गाने... बस.....

यहीं जरूरत महसूस होती है किसी साथी की, किसी दोस्त की, किसी अपने की। मुंह अँधेरे तड़पती आवाज़ में चीखने वाला वह शख़्स शायद नितांत अकेला है। गैस पर चढ़े कूकर को नीचे उतारकर मैं सोच रहा था कि आज तो मैं पक्का पता कर लूंगा कि कौन है वो अपरिचित..! पत्थरों के इस शहर में, जिसकी आवाज़ सुनने वाला कोई नहीं. धीरे-धीरे रात गहरा रही थी, व्हाट्सएप पर अब गर्लफ्रेंड के मैसेज आने भी बंद हो गए, लगता है वो सो गयी। मेरी भी आँख लग रही थी। मोबाइल बार-बार हाथ से छूट जा रहा था, उठा पानी पीकर बत्ती बुझायी और सो गया। बेहोशी जैसी नींद थी कि एक झटके में अचानक से टूट गई। फिर वही चीख, वही दर्द, उतनी ही तेज आवाज़ पर आज तो मैं मूड में था। बेड से उठा मोबाइल का टॉर्च जलाकर बिजली का स्विच ऑन किया, सिगरेट जलाई, गर्लफ्रेंड को टेक केयर, लव यू का मैसेज कर निकल पड़ा। अब गली में आ गया था। कुत्तों के झुण्ड चौकीदारों 7 की तरह चौकन्ने घूम रहे थे। कुत्तों से मुझे सबसे ज्यादा डर लगता है. नहीं.... नौकरी के खो जाने का है। कुत्तों का डर दूसरे नंबर पर है। गली में उतरते ही सामने फ्लोर की बत्ती जलती मिली। अंदाजा लगाया कि आवाज़ शायद यहीं से आती होगी। आवाज़ की तेजी और स्पष्टता से तो यही लगता है, मैं उस फ्लैट की ओर बढ़ा। सीढ़ियों से चढ़ते हुए आवाज़ की गति मद्धिम पड़ती हुई सुनाई दे रही थी। मैं अब फ्लैट के गेट पर था दरवाज़ा खुला हुआ था। शायद वो हर रात किसी बचाने वाले की आस में दरवाज़ा खोलकर ही सोता है. हाय, कितना असहाय है ये आदमी और जीने की कितनी तीव्र इच्छा है इसमें मैंने हौले से गेट पर धक्का दिया तो दंग रह गया. अन्दर एक पच्चीस साल का लड़का, हाथ में सिगरेट जलाए, दूसरे हाथ में कागज़ लेकर कुर्सी पर बैठा ऊँघ रहा था। मैंने उसे झकझोरा वह हड़बड़ा कर ऐसे उठा कि सिगरेट भी हाथ से छूट गयी. मैंने उसे कहा, भाई क्या तकलीफ है आपको? वह पहले तो भौंचक्का-सा मेरी तरफ देखता रहा और बाद में आँखे मींचते हुए कागज़ मेरी ओर बढ़ाया. ओह, यह तो नाटक की स्क्रिप्ट है. जाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज की ड्रामेटिक सोसाइटी की अगली प्रस्तुति 'जिंदगी दो पल की मेरी तरफ देखकर वह हँसता हुआ बोला, जी मैं इस नाटक में कैंसर पेशेंट के रोल में हूँ. रात को डायलाग रिहर्सल करता हूँ. दिन को टाइम नहीं मिल पाता तो रात की शांति में ठीक से करने की कोशिश करता हूँ. मुझे लगता है आपको मेरे डायलाग ने परेशान किया. ? ओ माय गॉड! मतलब मैं इस सीन में दर्द डाल पाने में अब सक्षम हो पा रहा हूँ. थैंक्स टू यू और परेशानी के लिए माफ़ी भी मैं झेंप गया. खिसयानी-सी हंसी हंसने के अलावा और कर भी क्या सकता था। मेरे मनोभाव को समझते हुए उसने दूसरी सिगरेट सुलगाई और मेरी तरफ बढ़ाया। मैं दो कश लगाकर मुस्कुराते हुए 'तुम्हारा नाटक जरूर देखने आऊंगा, आल द बेस्ट' कहकर निकल पड़ा। कुत्ते भी अब सो गए थे, सुबह का उजाला निकलने वाला था।

– रक्षित राज

धरातल

तकलीफ़ देह है
हृदय में महसूस ना होना
धरातल का
आसमान से गिर रही
गेंद का उसे ढूँढ ना पाना
दांतों द्वारा नाखून चबाना
होठों को काटना
थूक के साथ बात निगल जाना
तकलीफ़ देह है

पर,
मेरे गाल पर हाथ रखना
माँ की गोद में सर रखना
मन के रंगों को
कैनवास पर रंगना
घर पहुँच जाना
खींचकर ले आता है धरातल को

टपके खाती हुई गेंद
चूम लेती है माथा
धरातल का
सूर बेल के संग लिपटकर
खोल देते हैं द्वार मन का
धूप सहला देती है
सर फूलों का

आंखे खुल जाती हैं
ग्यारा में लिपटी कस्सी को
मिल जाता है बिल
और इकट्ठा हुआ पानी
बुझा देता है पेट की आग
पर अब भी धरातल जल रहा है

– हिमांशु

जीवन वृत्त

मैं सोचता हूँ
ये जीवन एक वृत्त है
और मैं एक चींटी -मज़दूर चींटी
जो गोल-गोल चक्कर काटकर
मर जाएगी
मुझे रौंदने के लिए
तैयार खड़ी है भीड़
जो मुझे अंधभक्त और लिबरंदु
के उन्मान से नवाज़ती है
कहते हैं -मैं फ्री की रेवड़ी
खाने वाला हूँ
मैं चबाते हुए
फिर से सोचता हूँ
ये पैरों में फोड़ा
मेरी फूहड़ता से आया
या ज़माने की

मैं बर्दाश्त नहीं कर पाता
बेरंग फ़ाग
एक तरह के ग़ुलाब
और अपनी बंद नाक
क्योंकि मैं एक चींटी हूँ
मुझे अंधा हो जाना है
ऐसा दुनिया कहती है
यही मेरी नियति है

और मैं ढूँढ रहा हूँ
नियति लिखने वाले को
लोहे की कुर्सी पर बांधकर
मैं उसे इतना करंट लगाऊँगा
हटाना पड़ेगा उसे
मेरी नियति से -नियति शब्द

– हिमांशु

कॉलेज में आम का पेड़

आम का नाम सुनते ही सभी के मुँह में पानी आने लगता है, ऐसा कोई ही व्यक्ति होगा जिसे यह मीठा व रसीला फल पसंद न हो। परंतु आज हमारा विषय यह फल न होकर हमारे कॉलेज यानी ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज में आम के पेड़ हैं ।

हमारे कॉलेज में चारों तरफ अनेक प्रकार के पेड़ - पौधे लगे हुए हैं । आश्चर्य की बात तो यह है कि हमें कॉलेज जाते हुए ६ महीने से अधिक का समय हो गया परंतु हमारा ध्यान इस ओर गया ही नहीं कि हमारे कॉलेज में आम के पेड़ भी हैं । किसी ने सही ही कहा है " एक जगह को जितनी बार घूमेंगे उतनी बार कुछ नया खोजेंगे । " इन आम के पेड़ के बारे में हमें हमारे रचनात्मक लेखन के अध्यापक से पता चला।

इन आम के पेड़ों के बारे में पता चलते ही मेरे और मेरी दोस्त जो मेरे ही साथ मेरे कोर्स में पढ़ती है , दोनों के मन में आम के पेड़ को देखने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई । क्लास खत्म होते ही हम दोनों आम के पेड़ खोजने निकल गए। सर ने बताया था कि ये पेड़ पुस्तकालय के पास जो छोटा बागीचा है उसमें लगा हुआ है और दूसरा वहीं कहीं आस-पास है। कितने आश्चर्य की बात है, जो पेड़ आज तक हमारे लिए अदृश्य वस्तु की भाँति था, आज वह हमें उस जगह जाते ही दिखने लगा। कुछ देर उस पेड़ को देखने के बाद हमने पाया कि उस पर छोटे-छोटे आम लगे हुए हैं और मोल आया हुआ है। फिर हम इस पेड़ की तस्वीर लेकर दूसरा पेड़ खोजने के लिए निकल गए। वह भी कुछ ही कदमों की दूरी पर साइंस ब्लॉक के पीछे था, जैसा सर ने बताया था।

पेड़ों पर लगे कच्चे आम देखकर हम दोनों के मन में उन्हें तोड़ने का ख्याल आया और इनके बारे में सोचकर ही मुंह में पानी आने लगा। फिर हम दोनों ने एक दूसरे से प्रश्न किया कि " क्या तुझे पेड़ों पर चढ़ना आता है? " दुर्भाग्य से दोनों में ही यह कला नहीं थी; होती भी तो क्या ही कर लेते, कॉलेज प्रापर्टी थी कोई आम तोड़ते देखता तो फटकार और लगाता।

ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज, दिल्ली विश्वविध्यालय का सबसे पुराना कॉलेज है, तो मेरे मन में एक प्रश्न आया कि " यह पेड़ कितने पुराने होंगे? " मुझे इस प्रश्न का उत्तर जानना था इसलिए मैं पुस्तकालय गयी और वहाँ प्रवेश द्वार पर जो अध्यापक मौजूद थे उनसे यह प्रश्न पूछा। पूछने पर पता चला की एक पेड़ ८ साल पुराना और दूसरा १९-२० साल पुराना है।

इन आम के पेड़ों पर नीचे की तरफ जो कच्चे आम लगे थे,वो कुछ छात्रों द्वारा तोड़ लिए गए। परंतु जो आम ऊपर लगे हैं, उनका क्या होगा? क्या वह भी छात्रों द्वारा तोड़ लिए जाएंगे या फिर वह आंधी व बारिश के प्रभाव से नीचे गिर कर खराब हो जाएंगे या कोई माली उन्हें तोड़ लेगा? उन आमों को लेकर मेरे मन में अनेक प्रश्न उठ रहे हैं।

इन पेड़ों को देखकर मुझे अपने आम के बागीचे की याद आती है। बागीचे में खेलना, वो आम के मौसम में मीठी-सी खुशबू जो मन को तरो-ताजा कर देती थी, पेड़ों पर झूला डालकर झूलना आदि सभी यादें ताज़ा हो गयी। अब तो जब भी पुस्तकालय की ओर जाते हैं, तभी इन पेड़ों को देखते है और मन ही मन यह सोचकर मुस्कुराते हैं कि हम भी ऐसे पेड़ लगाएंगे। इस लेख में सिर्फ दो ही पेड़ों की बात की गई है, कॉलेज में ऐसे कई और आम के पेड़ हैं । मैं चाहती हूँ कि पाठक खुद जाकर उनका ब्यौरा करें ।

धन्यवाद ।

– शानू

हिंदी विभाग द्वारा आयोजित नवोन्मेष : रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागी

तृतीय स्थान- सौम्या

प्रथम स्थान - विजय कुमार मिश्रा

द्वितीय स्थान - आशिका

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय के सूल।।"

ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज (प्रातः) की हिन्दी साहित्य सभा : अरुणोदय द्वारा 14 सितंबर 2022 को हिन्दी दिवस के सुअवसर पर वैधानिक राजभाषा और मनोनीत राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रसार-प्रचार एवं उसके संवर्धन को दृष्टिगत रखते हुए आयोजित कार्यक्रम कुछ इस प्रकार रहें -

कार्यक्रम में बतौर व्याख्याता दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रोफ़ेसर डॉ अनिल राय जी रहें। डॉ राय के आगमन के उपरांत ज़ाकिर हुसैन दिल्ली महाविद्यालय के हिन्दी विभाग प्रमुख प्रोफेसर अंजन जी द्वारा डॉ राय को पुष्पगुच्छ प्रदान कर सम्मान प्रकट किया गया। इसके पश्चात् कार्यक्रम अपने स्वाभाविक लक्ष्य की ओर बढ़ा। डॉ राय ने 'हिन्दी के समक्ष वर्तमान की चुनौतियां और भविष्य की संभावनाएं' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया, जिससे विद्यार्थियों के मनोमस्तिष्क में हिंदी में भविष्य को लेकर समस्त शंकाओं का समाधान हुआ और भविष्य की राह किस प्रकार तय हो उसकी भी सम्यक समझ विकसित हुयी। कार्यक्रम में श्रोता के रूप में महाविद्यालय का पूरा हिन्दी विभाग उपस्थित रहा।

इसके पश्चात हिंदी प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम प्रारंभ हुआ जिसे दो चरणों में सम्पन्न किया गया।

प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम के उपरान्त महाविद्यालय परिसर में स्थित प्रेक्षागृह में भीष्म साहनी द्वारा रचित 'चीफ की दावत' कहानी का विद्यार्थियों के द्वारा अद्भुत नाट्य मंचन किया गया।

मध्याह्न के पश्चात् एक बार पुनः कार्यक्रम ने अपनी गति पकड़ी और प्रारंभ हुआ स्वरचित कविता पाठ का दौर, जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों से पधारे प्रतिभागियों ने अपनी स्वरचित कविताओं का मनहर कविता पाठ किया।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में लघुकथा लेखन प्रतियोगिता प्रारंभ हुई जिसमें प्रतियोगियों को दिखाए गए कुछ चित्रों के आधार पर अपनी मौलिकता और कल्पनाशील विचारों से लघुकथा लिखने का लक्ष्य दिया गया।

निर्णायक मंडली में डॉ लक्ष्मण यादव, डॉ योगेश्वर तिवारी, डॉ साबिर, डॉ सज्जन बतौर निर्णायक उपस्थित रहें।

कार्यक्रम की अंतिम चरण में महाविद्यालय के हिन्दी विभाग प्रमुख डॉ अंजन सर द्वारा विजयी प्रतियोगियों को नकद पुरस्कारराशि एवं प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया और कार्यक्रम को सफल और निर्विघ्न संपन्न कराने में अपेक्षित सभी को यथासंभव सहयोग एवं सहभागिता के प्रति हृदय से आभार किया और अरुणोदय : हिन्दी साहित्य सभा को इस सुंदर, सफल आयोजन के लिए शुभकामनाएं प्रदान की।

आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ की राजभाषा क्रियान्वयन संगोष्ठी का विवरण

ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कालेज के प्राचार्य प्रोफेसर नरेन्द्र सिंह ने कॉलेज की आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ का गठन किया । प्रोफेसर प्रेम कुमार शिशोदिया को इस प्रकोष्ठ का प्रभारी नियुक्त किया ।

आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ ने राजभाषा क्रियान्वयन के सन्दर्भ में 24 . 25 अप्रैल 2023 को प्रथम दो दिवसीय कार्यशाला का सफल आयोजन किया । जिसमें पहले दिन कॉलेज के शिक्षकों ने भाग

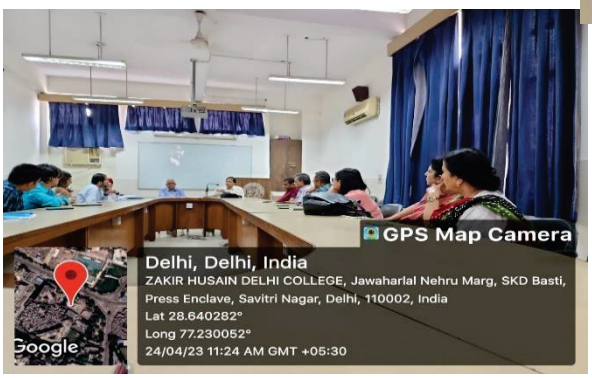

लिया

तथा दूसरे दिन कॉलेज के प्रशासनिक सेवा से जुड़े सभी कर्मचारियों ने हिस्सा लिया ।
आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रोफ़ेसर प्रेम कुमार शिशोदिया ने सभी उपस्थित सहयोगियों और कर्मचारियों को संबोधित करते हुए राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के महत्त्व को स्पष्ट किया । प्रोफ़ेसर शिशोदिया ने कहा कि राजभाषा का संबंध सिर्फ़ फ़ाइलों का पेट भरने के लिए नहीं होना चाहिए बल्कि

रोजमर्रा के काम में उसका उपयोग होना चाहिए । उन्होंने कहा यदि हम अपने कामकाज में उसका उपयोग करेंगे तो वह सहज ही राजभाषा से राष्ट्र भाषा बन सकती है ।

राजभाषा क्रियान्वयन संगोष्ठी के संयोजक प्रोफ़ेसर हरेन्द्र सिंह ने विस्तार से राजभाषा के अधिनियम क्रियान्वयन और उपयोगिता को ध्यान में रखकर अपनी बात रखी । हिन्दी भारत की ही नहीं विश्व की दूसरे नंबर की सर्वाधिक प्रयोग में लायी जाने वाली भाषा होते हुए भी वह भारत की राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त

नहीं कर पाई । इस बात पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि राजनीतिक दृढ़ इच्छाशक्ति के अभाव और दलगत राजनीतिक कारणों से राष्ट्र भाषा का प्रश्न उलझता चला गया ।

प्रोफ़ेसर हरेन्द्र सिंह ने कहा हिन्दी का हम जितना अधिक सरल और सहज प्रयोग करेंगे वह उतनी ही लोक ग्राह्य होगी ।राजभाषा का विकास वर्चस्व की भावना से नहीं, सरल , सहज और सहयोग की भावना से ही हो सकता है । कॉलेज के प्रशासनिक कर्मचारियों के सामने अपनी बात रखते हुए उन्होंने कहा कि कालेज के दैनिक कार्य में यदि आप हिन्दी का उपयोग शुरू करेंगे तो दुरूह या मुश्किल समझी जाने वाली चीजें सहज होती चली जायेंगी । कॉलेज की , सूचनाएँ , निर्देश , अवकाश के प्रार्थना पत्र , छात्रों और कर्मचारियों के पहचान पत्र , समय.सारणी , प्रश्न पत्रों के नाम , विभिन्न संस्थाओं के निमन्त्रण पत्र , विभागीय समितियों की कार्य सूची , कार्य वृत्त , समितियों के विवरण ,पुस्तकों की सूची इत्यादि पर ही हम काम करना आरंभ कर दें तो भी भविष्य में हमारी भाषा अपने स्वतरू समर्थ हो जायेगी ।

प्रोफ़ेसर गुरु प्रीत सिंह टुटेजा ने वेबसाइट का राजभाषा में निर्माण और तकनीकी सहयोग का आश्वासन दिया । साथ ही नई तकनीक के प्रयोग से राजभाषा के क्रियान्वयन , में अनेक नवीन कंप्यूटर टूल्स , गूगल , चैट.जीपीटी , अनुवाद की सुविधा ,आदि के बारे में बताया । तकनीक के माध्यम से भाषाओं का सदुपयोग कैसे किया जा सकता है , इस पर विस्तार से चर्चा की ।

कॉलेज के अनेक सहयोगियों ने अपने विचार इस संदर्भ में रखे । प्रोफ़ेसर सरिता पासी रसायन विज्ञान , ने प्रारूप ; Format को लेकर अपनी चिंता रखी । प्रोफ़ेसर दीपक कालिया , संस्कृत विभाग ने सभी उपस्थित शिक्षकों का धन्यवाद ज्ञापित किया ।

राजभाषा क्रियान्वयन समिति की दूसरी संगोष्ठी में प्रशासनिक विभागों से जुड़े सभी कर्मचारियों ने भाग लिया। कॉलेज के प्रशासनिक अधिकारियों , कर्मचारियों , वित्त.विभाग , पुस्तकालय , प्रयोगशाला आदि से जुड़े साथियों को पुनरू प्रोफ़ेसर प्रेम कुमार शिशोदिया ने संबोधित किया और असल राज भाषा के प्रयोक्ता की नींव कहा ।प्रोफ़ेसर शिशोदिया ने उनसे राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने का आग्रह किया ।

कॉलेज के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री ज़फ़र कमाल ने राजभाषा हिन्दी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए अपनी बात रखी । उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि हम कॉलेज के कर्मचारियों , छात्रों के परिचय पत्र , छात्रों से जुड़ी सूचनाएँ , अवकाशए सरकारी निर्देश , आदि शीघ्र ही हिन्दी में नियमित रूप से कार्य प्रारंभ कर देगें । इस संगोष्ठी में बहुत से कर्मचारियों ने अपनी चिंताएँ सामने रखीं ।

संगोष्ठी के संयोजक प्रोफ़ेसर हरेन्द्र सिंह ने सबकी बातों और चिंताओं का समाधान करते हुए कहा कि राज भाषा का संबंध सिर्फ़ मजबूरी में नहीं राष्ट्रीय अस्मिता के साथ जोड़ कर देखने की ज़रूरत है । उन्होंने कहा कोई भी भाषा शुद्ध नहीं होती और न ही हमें शुद्धता के कारण किसी भाषा को टालना चाहिए । भाषा व्यवहार की चीज है । वह निरन्तर बदलती , फ़िल्टर होती हुई आगे बढ़ती है ।प्रोफ़ेसर हरेन्द्र सिंह ने हिन्दी के पहले कवि अमीर खुसरो को याद करते हुए कहा कि भ खुसरो ऐसे कवि हैं जो कहते हैं भ मैं हिन्दी की तूती हूँ , यदि आप मुझसे हिन्दी में बात करोगे तो मैं तुम्हें हिन्दुस्तान के बारे में अद्भुत ज्ञान दे सकता हूँ , महाकवि विद्यापति की भदेसिय बयना सब जन मिट्ठा भ का भी उन्होंने उदाहरण दिया । साथ ही कबीर को याद करते हुए उन्होंने कहा भाषा बहते नीर की तरह होती है । हमें दूसरी भाषाओं के ज़रूरी शब्दों के प्रयोग से पीछे नहीं हटना चाहिए । बहुत से पारिभाषिक शब्द रखने की जगह जो शब्द प्रचलित हैं

और सर्व ग्राह्य हैं उन्हें उसी रूप में ले लेना चाहिए ।अंग्रेज़ी का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि अंग्रेज़ी ने अपने शब्दकोशों में भारतीय भाषाओं के तीस हज़ार शब्दों को ले लिया । अंग्रेज़ी के विस्तार का कारण उसकी अन्य भाषाओं से शब्द ग्राह्यता ही है । जो विचार हमारे वैदिक ऋषियों ने हमें दिया था और कहा था कि भ आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतो कि सभी तरह के विचार हम तक आयें और हम अपने आप को समृद्ध करें , हमें इस विचार का हमराही होकर आगे बढ़ना होगा , तभी हम सबका साथ , सबका विकास और सबका विश्वास प्राप्त करके आगे बढ़ सकते हैं ।

कॉलेज के प्रशासनिक अधिकारी श्री अयाज़ अहमद ने सभागार में उपस्थित सभी कर्मचारियों को राजभाषा के क्रियान्वयन में सहर्ष सहभागिता के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया ।

संयोजक
प्रोफ़ेसर हरेन्द्र सिंह ।
हिन्दी .विभाग
ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कालेज
दिल्ली विश्वविद्यालय ।